देकार्त के ज्ञान संबंधी विचार

देकार्त के ज्ञान संबंधी विचारों पर चर्चा करने से पहले यह देखने से हमें मदद मिलेगी कि देकार्त से पहले और उसकी समकालीन दुनिया में ज्ञान को लेकर क्या विमर्श था और ज्ञान के बारे में किस तरह के सवाल उठाए जा रहे थे? ज्ञान की दुनिया में हमेशा से ही संशयवादी रहे हैं।

संशयवादी हमेशा से ही ज्ञान की सत्यता को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। यह ऐसा मत है जो ज्ञान के बारे में सवाल उठाता रहा है कि, हम कैसे जानते हैं कि हम जो जानते हैं वह सत्य है? यह ज्ञान की एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या को एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। मान लीजिए, मैं अभी एक टेबिल पर बैठकर लिख रहा हूं। मुझे इस टेबिल के बारे में बहुत से इन्द्रिय अनुभव हो रहे हैं और मैं मानता हूं कि इन्द्रिय अनुभव से मुझे जो ज्ञान हो रहा है वह सही है।

अर्थात् मुझे इन्द्रिय अनुभव से यह टेबिल भूरे रंग की, छूने पर कठोर एवं चिकनी और चौकोर; आदि महसूस हो रही है। लेकिन संशयवादी सवाल उठाते हैं कि यह कैसे तय होगा कि टेबिल के बारे में मुझे इन्द्रिय अनुभव से जो ज्ञान हो रहा है, वह सत्य है? संशयवादी सवाल करते हैं कि, अनेक बार हमें जो दिखता है वह सत्य नहीं होता। मान लीजिए, हम किसी रेगिस्तान में हैं और तेज धूप खिली हुई है। अनेक बार हमें ऐसा लगता है कि दूर कहीं पानी भरा है। जब हम उस स्थान पर पहुंचते हैं तो पाते हैं कि थोड़ी देर पहले हम जहां पानी का होना मान रहे थे, वहां पानी तो नहीं है। जबकि हमारी आंखों से हमें वहां पानी का ज्ञान हो रहा था। लेकिन इसके बावजूद इन्द्रिय अनुभव से होने के बाद भी सत्य तो नहीं है। इसी प्रकार अनेक बार हम अपने जीवन में इन्द्रिय अनुभव को वास्तविक ज्ञान से भिन्न पाते हैं।

हम अनेक बार सपना भी देख रहे होते हैं और सपना देखते हुए, हमें लगता है कि जो हम देख रहे हैं वह एकदम सही है। ऐसा ही हम अनेक बार जादू में भी देखते हैं कि, कोई जादूगर अपनी टोपी से कबूतर निकालकर हमें दिखा रहा है। हमें उस समय कबूतर निकलता

हुआ दिखाई देता है। हमारी आंखें ऐसा साक्षात् देखती हैं। लेकिन वह सत्य तो नहीं होता। फिर हम कैसे मानें कि हमें जो इन्द्रिय अनुभव से ज्ञान हो रहे हैं वे सत्य हैं?

देकार्त संशयवादियों के द्वारा ज्ञान के क्षेत्र में उठाए गए इन सवालों का हल खोजना चाहते थे। देकार्त के समय में प्राकृतिक विज्ञानों एवं गणित के क्षेत्र में भी बहुत काम हो रहा था। ऐसा ज्ञान जिस पर संदेह न किया जा सके और जो अनिवार्य रूप से सत्य हो; इस प्रकार के ज्ञान के आदर्श के रूप में गणितीय ज्ञान को देखा जाता था। प्लेटो की भांति देकार्त गणितीय ज्ञान के प्रति बहुत आकर्षित थे लेकिन वे विज्ञान से भी प्रभावित थे। गणित और विज्ञान में ज्ञान प्राप्त करने की विधियां एक–दूसरे से बहुत भिन्न होती हैं। जहां गणित में समस्त ज्ञान बुद्धि द्वारा अर्जित होता है वहीं विज्ञान में इन्द्रिय अनुभव के आधार पर प्राप्त किया जाता है। देकार्त भी प्लेटो की भांति ज्ञान को ठोस और पक्की नींव पर खड़ा करना चाहते थे और इसलिए उन्होंने निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक दार्शनिक विधि अपनाई और इसके लिए उन्होंने चार नियम बताए : एक, जब तक किसी चीज की सत्यता का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो जाए तब तक उसे सत्य नहीं मानना। अर्थात् किसी चीज के बारे में अपनी धारणा बनाते समय जल्दबाजी और पूर्वाग्रह को सावधानीपूर्वक दूर करना और उसी चीज को ग्रहण करना जिसकी सत्यता पर संदेह न किया जा सके। दूसरे, जब भी किसी समस्या पर विचार करना हो तो उसके उचित समाधान के लिए जितना संभव और जरूरी हो, उसके छोटे–छोटे हिस्से करके विश्लेषण करना। तीसरे, किसी भी प्रश्न पर व्यवस्थित ढंग से विचार करते हुए सरल, सहज और सुगम चीजों के ज्ञान से शुरू करके आहिस्ता–आहिस्ता एक निश्चित क्रम में आगे बढ़ते जाना। चौथे, अपने विचारों में कदम–कदम पर ठहरकर पुनः उन्हें देख लेना ताकि इस बात पर यकीन हो जाए कि विचार श्रृंखला में कहीं भी कोई चूक तो नहीं हो गई है।

000